

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१७/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिती में बैठें...अपनी मूलस्वरूप अवस्था को देखें...सभी अपना मूलस्वरूप को स्पष्टता से देखें...आत्मा अपने सिंहासन पर स्थित है...लाइट के रूप में चमक रही है...आत्मा की यह मूलस्वरूप की अवस्था से लाइट की किरणें पूरे शरीर में फैल रही है... देखिए अपना मूलस्वरूप...अनुभव करें..

जितना जितना मूलस्वरूप को देखेंगे उतना उतना मूलस्वरूप और पक्का होता जाएगा, जो आप बुद्धी की आखों से देखते हो। जिसे बार बार बुद्धी की आखों से देखते हो, वह पक्का होता जाता है, इसलिए जितना जितना अपने मूल स्वरूप को देखते जाएंगे उतना उतना वह पक्का होता जाएगा। हर कर्म में देखो उसे। ध्यान कर्मों में ना हो, ध्यान मूलस्वरूप पर हो। भल शुरु में समय लगेगा, मूलस्वरूप को देखते देखते कर्म करने में पर जितना उसे देखते देखते हर कर्म करते जाएंगे उतना उतना वह संस्कार बन जाएगा। पहले अभ्यास करना पड़ेगा अटेंशन देके। एक बार संस्कार बनने के बाद वह ऑटो में होता जाएगा हर कर्म में। फिर हर कर्म उस ही मूलस्वरूप अवस्था में रह कर होते जाएंगे, पर पहले खुद से अटेंशन देके करना होगा।

जैसे छोटे बच्चे को सिखाया जाता है, उसका हाथ पकड़ कर उससे लिखवाया जाता है पर कब तक करना पड़ता है जब तक उसके हाथों को वह उसका संस्कार ना बने, वह शब्द लिखने का वह अक्षर लिखने का। उसी प्रकार जब तक आत्मा अपने मूलस्वरूप में रह कर कर्म आसानी से नहीं करेगी तब तक कर्मों को थोड़ा धीमे गती से करना होगा। अटेंशन देना होगा मूलस्वरूप पर, मूलस्वरूप को देखकर हाथों द्वारा कर्म करने हैं, मूलस्वरूप को देखकर शरीर को भोजन खिलाना, शरीर को नहलाना, शरीर को वस्त्र पहनाना, हर बाहरी कर्म, जितना जितना मूलस्वरूप में रहकर करते जाएंगे उतना उतना सभी

कर्मद्वियों को वह एक आदत बनेगी उन सभी का वह एक संस्कार बनेगा। अगर आत्मा अपने मूल स्वरूप में ना रहकर बाहरी मायावी अस्तित्व को लेकर कर्म करेगी तो उसके सारे संस्कार मायावी होंगे, फिर उसके हर कर्मद्वियों में मायावी अस्तित्व ही होगा, फिर उससे होने वाले सारे कर्म मायावी स्वरूप के होंगे, और उससे दुख मिलेगा, कष्ट मिलेगा, परेशानिया होंगी, क्योंकि जड़ ही है माया, मायावी अस्तित्व।

हर किसी के पास बहुत समय है। अगर हर कर्म में मूलस्वरूप का ध्यान रखेंगे, तो हर किसी के पास पर्याप्त समय है। हर कर्म मूलस्वरूप में करने का संस्कार बनाया जा सकता है। मूलस्वरूप में कर्म करने के संस्कार बनाने के लिए कोई अलग समय की जरूरत नहीं है, आप जो कर रहे हो, बस यही समझ हो, कि आप आत्मा आपके मूलस्वरूप स्थिती में स्थित रहकर, उस लाइट को, उस सितारे को देख कर कर्म कर रहे हो। जैसे उस लाइट को भूल गए, आप मायावी अस्तित्व वाले बन गए। लाइट गयी, माया आयी। यह बहुत सूक्ष्म खेल है। सारा खेल आत्मा की लाइट ऑन रखने का है। क्योंकि आत्मा की लाइट जैसे ऑन होती है, सभी मायावी अस्तित्व हट जाते हैं। उस लाइट में सिर्फ शुद्ध कर्म ही होगा और उस लाइट में किये हुए हर कर्म में पुण्य ही होगा। सबसे पहले लाइट में कर्म करने का संस्कार बनाना होगा। अब तक के आत्मा ने जितने बार जन्म लिये है शरीरों में पार्ट बजाया है वहाँ पर आत्मा के अंदर सारे बाहरी संस्कार पड़े हैं, अभी इस समय में उन सभी संस्कारों को हटा कर मूलस्वरूप के सभी संस्कारों को धारण करना होगा।

संस्कारों का परिवर्तन ही सब कुछ है क्योंकि आत्मा अपने संस्कारों के कारण ही दुखी होती है या सुखी होती है। हर कोई अपने से चेक करें आपके सामने कोई विपरीत परिस्थिती आती है, उस समय में आप आत्मा उस परिस्थिती में कैसे रहती हो अगर आप आपके मूलस्वरूप स्थिती में नहीं होंगे तो परिस्थिती के प्रभाव में आकर आपसे भी विपरीत कर्म होते जाएंगे। उसके विपरीत अगर आप विपरीत परिस्थिती में भी आत्मा अपनी मूलस्वरूप स्थिती में रहेगी तो वह विपरीत परिस्थिती भी परिवर्तित हो जाएगी, इतनी आत्मा की मूलस्वरूप की ताकत है, बस इसे कोई अनुभव करें। आप परिस्थिती को बाहरी रूप से सॉल्व नहीं करना, परिस्थिती को आप आत्मा की आंतरिक मूलस्वरूप स्थिती से ठीक करना

और जब आत्मा अपने मूलस्वरूप में स्थिती में स्थित रहती है हर परिस्थिती में तो वह परिस्थिती पूर्ण रूप से परिवर्तित होती ही जाती है और उस प्रकार की परिस्थिती कभी भी अगले बार नहीं आएगी उस आत्मा के सामने। इसलिए आत्माएं मूल स्वरूप स्थिती के अभ्यास को लेकर गंभीरता में आए, आपका आने वाले कल्प का ड्रामा इस ही मूलस्वरूप अवस्था पर निर्भर है। इस अवस्था को पाने के लिए अलग से कोई समय नहीं मिलने वाला है, आपके पास जो जो समय है, उस समय को सम्पूर्ण रूप से सफल करो क्योंकि समय जा रहा है समय भी परिवर्तन हो रहा है।

हर कोई अपने को चेक करे कि क्या सच में मुझे मेरे मूलस्वरूप अवस्था में आने के लिए अलग से कभी कोई समय मिलने वाला है क्या? संसार तो सदा चलता ही रहेगा वो चलता आया है वो सदा चलता रहेगा पर आत्माओं के पास समय कम है अपने को परिवर्तन करने का। आत्माएं खुद से ही चेक करें क्या अभी भी संसार में ही समय को व्यर्थ गवाना है या समय को अपने कल्याण के लिए आत्मा के परिवर्तन के लिए लगाना है। कभी भी कोई भी आत्मा किसी के भी भरोसे पर नहीं रहना कि हमारा तो कल्याण हो ही जाएगा। परमात्मा हमारा कल्याण जरूर करेगा। परमात्मा उसी का कल्याण करेगा, जो आत्मा अपने उपर कृपा करेगी, मूलस्वरूप में आने की। हर कोई चेक करें, अभी भी संसार पसंद हैं, या अपने कल्याण के लिए, अपने परिवर्तन के लिए समय को लगाना है।

समय भी अचानक परिवर्तन होना है। आपको किसी को भी बताया नहीं जायेगा कब क्या होने वाला है। इसलिए सभी आत्माएं जागृत हो जाए और अपने उपर आप ही कृपा करें। अपने माया से बाहर आए और अपने कल्याण के बारे में सोचें। इस ही युग में आत्मा को तपस्या करनी है अपने मूल स्वरूप अवस्था में आने की, बाकि सभी युगों में सभी जन्मों में आत्मा सिर्फ मौज ही करती है। हर प्रकार के भोग लेती है, हर प्रकार का आनन्द करती है, सुख भोगती है, पर यह जो समय है, उसमें सभी का त्याग करके, आत्मा को अपनी तपस्या में बैठना ही होगा, अगर आत्माएं अपना कल्याण चाहती है तो। परमात्मा अलग से कृपा नहीं करेंगे। सभी आत्माएं होश में आए, संसारी बातों में जाना, खान पान, वस्त्र अलंकार, घूमना फिरना, मौज करना, इन सभी बातों से जल्द से जल्द बाहर आना, क्योंकि समय

परिवर्तन हो रहा है। जहां जहां संसारी बातों में कम्फर्ट है, वहां वहां माया है फिर आत्माएं अगर अपने कल्याण की यात्रा में परिवर्तन की यात्रा की ओर लग पड़ी है और उसमें भी अगर आत्माओं को खान पान की पड़ी हो अपने शरीर की पड़ी हो अपने बाहरी सभी व्यवस्थाओं की पड़ी हो तो भी आत्माएं फंसी है। संपूर्ण वैराग्य माना संपूर्ण त्याग इस ही युग में संपूर्ण त्याग करके आत्मा को तपस्या करनी ही होगी। यही अभ्यास है संगम युग में आत्मा का। जितना मूलस्वरूप में आते जाएंगे बाकी बाहरी सभी बातें ठीक होती जाएंगी। बाहरी व्यवस्था किसको लगती है? आपके माया को। पर अगर आत्मा मूलस्वरूप में स्थित है, तो बाहरी व्यवस्था हो या ना हो, आत्मा अपने आनन्द में, मौज में, सुख में सदा रहेगी। हर कोई अपने स्थिती की चेकिंग करना, अगर मन किसी का उपर नीचे हो रहा हो, कहां उदासी है, कहां नाराजगी है, कहां डिस्टर्बन्स है, यह सभी मायावी अस्तित्व है। आत्मा के पास यह कोई विपरीत गुण कभी नहीं होते, ना ही किसी युग में होते हैं। यह सभी आपके मायावी अस्तित्वों के गुण हैं। इसलिए जल्द से जल्द सभी आत्माएं जागृत होकर अपने मूलस्वरूप अवस्था की यात्रा को शुरुवात करें। हर एक आत्मा संपूर्ण स्वतंत्र है। अपने मायावी अस्तित्व में फंस कर कर्म बंधनों में अटक गई हैं।

अगर आत्मा दिल से मूलस्वरूप अवस्था का अभ्यास करेगी, उसके हर प्रकार के सभी कर्म बंधन कटते जायेंगे और आत्मा अपनी कल्याण की यात्रा की ओर बढ़ती जायेगी।

आज सभी आत्माएं चेक करें कि क्या आपको किसी ने कर्म बंधन में अटकाया है या आप आत्मा अटक गई हो। हर कोई अपने से चेक करें। वह कर्म बंधन सिर्फ शरीर के सम्बन्धी शरीर के परिवार वाले ही नहीं। बल्कि वह कर्म बंधन आपका खुद का शरीर भी क्यों ना हो। क्या आप आत्मा आपके शरीर में तो नहीं अटकी हो? क्या आप आपके शरीर को जैसे चाहे जब चाहे जितना चाहे जिस भी रूप से चाहे चला सकते हो? या आपका शरीर आपको चलाता है। तो हर कोई चेक करे कौन कौन से कर्म बंधनों में कर्म सम्बन्धों में अटके हो और आपको किसने अटकाया है। चेकिंग होना जरूरी है चेकिंग होगी तो ही सफाई होगी।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः